ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-9* October- 2017
Innovation The Research Concept

कामकाजी अभिभावक एवं उनके बच्चे : युगीन संदर्भों में पारिवारिक व्यवस्था का समाजशास्त्रीय अध्ययन

साधना पांडेय
शोध छात्रा,
समाजशास्त्र विभाग,
केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

सारांश

वर्तमान दौर में स्त्री और पुरूष दोनो अपनी बढ़ती आवश्यकताओं के कारण बाहर निकल कर काम कर रहे हैं। जिससे पूर्व की संयुक्त परिवार व्यवस्था से एकल परिवार व्यवस्था की ओर रूख बढ़ा है। इस परिस्थिति में सर्वाधिक प्रभाव कामकाजी अभिभावकों के बच्चों पर देखा गया है। उनके बच्चों का सन्तुलित शारीरिक मानसिक विकास प्रभावित हुआ है, साथ ही उनके सामाजीकरण में एक बाधा देखी गयी है। वस्तुतः माता–पिता के पास समयाभाव, अपनी दोहरी भूमिका निभा पाने में उनकी असमर्थता ने परिवार नामक संस्था को काफी हद तक विघटन के मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया हैं प्रस्तुत शोध पत्र का उद्‌देश्य संरचनात्मक प्रकार्यात्मक मॉडल के आलोक में इस समस्या का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना एवं नव–उदारवादी सामाजिक व्यवस्था के कुछ सकारात्मक समाधानों जैसे – मातृत्व सहायता, महिलाओं को अतिरिक्त अवकाश, महिला–पुरूषों को अनिवार्य आवधिक अवकाश, सामाजिक क्रिया के अन्य कई माध्यमों की सहायता से इस समस्या का समाधान करना है।

इन्हीं बदलती परिस्थितियों के मद्‌देनजर शोधार्थिनी के द्वारा व्यक्तिगत प्रेक्षणों एवं अन्य कई शोधार्थियों द्वारा पूर्व में किये गए अध्ययनों की समीक्षा व विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर दोहरे कामकाजी अभिभावकों एवं उनके बच्चों के माध्यम से युगीन पारिवारिक व्यवस्था का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : कामकाजी अभिभावक, संयुक्त परिवार।

प्रस्तावना

वर्तमान दौर जिसमें हम रह रहे हैं तीव्रता से बदलती नित नयी स्थितियों का युग है। इन्हीं परिस्थितियों में हमें अपनी बढ़ती आवश्यकताओं के कारण बाहर निकल कर देखना पड़ रहा है। पूर्व की भारतीय सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था जिसमें गुख्यतः पुरूष ही आर्थिक क्रियाकलापों का दायित्व निर्वहन करता था, में आज परिवर्तन आया है। स्त्री–और पुरूष दोनों बाहर निकल कर अपनी आर्थिक सुरक्षा सृजित कर रहे हैं। इन परिस्थितियों ने समाज के एक महत्वपूर्ण अवयव पारिवारिक व्यवस्था पर प्रभाव डाला है। पूर्व की संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था एकल परिवार की ओर बढ़ी है। इन नवीन सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से कामकाजी माता–पिता के बच्चों के विकास पर पड़ा है।

अध्ययन का उद्‌देश्य

इस शोध पत्र का उद्‌देश्य ऐसे ही कामकाजी अभिभावकों जिनमें माता–पिता दोनों घर से बाहर रहकर कार्य करते हैं, के बच्चों के संतुलित शारीरिक मानसिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है, साथ ही इस नवीन चुनौती में पूर्व की संयुक्त परिवार व्यवस्था एवं वर्तमान एकल परिवार व्यवस्था की क्या भूमिका दिखाई पड़ रही है? का संरचनात्मक प्रकार्यात्मक मॉडल के आलोक में अध्ययन करना है।

संरचनात्मक प्रकार्यात्मक मॉडल का तात्पर्य अध्ययन के उस दृष्टिकोण से है, जिसमें समाज को एक सावयवी इकाई के रूप में स्वीकार किया जाता है। जिसके अन्तर्गत परिवार के प्रत्येक सदस्य एवं उनका व्यवहार पूरी पारिवारिक व्यवस्था को प्रभावित करता है। हरबर्ट स्पेन्सर, टाल्कॉट पार्सन्स और राबर्ट के0 मर्टन जैसे समाजशास्त्रियों ने इस दृष्टिकोण के द्वारा समाज का समग्रता में अध्ययन करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में इसी दृष्टिकोण के माध्यम से कामकाजी अभिभावकों एवं उनके बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों और परिवार की भूमिका का अध्ययन

किया गया है। इसके साथ–साथ नव–उदारवादी सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत मातृत्व सहायता, महिलाओं को अतिरिक्त अवकाश, महिला–पुरूषों को अनिवार्य आवधिक अवकाश, सामाजिक क्रिया के अन्य कई माध्यमों से समस्या के समाधान में कहाँ तक सफलता देखी गयी है।

पूर्व के शोध पत्रों में इस समस्या को विभिन्न प्रकार से देखने का प्रयास किया गया है। शोधकर्ताओं के एक वर्ग ने बच्चों का पालन–पोषण पारिवारिक व्यवस्था की समस्या के रूप में देखा है जिसमें एकल परिवार में पति–पत्नी का सामंजस्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जबकि संयुक्त परिवारों में कामकाजी माता–पिता को किसी विशेष समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। शोध कर्ताओं के एक दूसरे वर्ग ने यह भी देखा कि बच्चों के स्वस्थ विकास में समानुभूति (Empathy) की महत्पूर्ण भूमिका होती है, जो बच्चों के मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। यह चुनौती, गंभीर रूप से दोहरे कामकाजी माता–पिता के बच्चों के समक्ष देखी गयी है। हालांकि शोधकर्ताओं का एक वर्ग यह भी मानता है कि अतिरिक्त आय की सुनिश्चिता के कारण माता–पिता अपने बच्चों की देखभाल के लिए सहायक नियुक्त कर सकें है, तथा उन्हें अच्छी शिक्षा सुनिश्चित करवा पाये है तथा उनमें आत्म निर्भरता बढ़ी है। किन्तु साथ ही यह भी देखा गया कि इस प्रकार की देखभाल में समानुभूति (Empathy) जैसे तत्व की कमी से बच्चों में अकेलापन, भय एवं माता–पिता के प्रति भावनात्मक लगाव कम हुआ है। इन्हीं में से कई बच्चे किशोरावस्था में विचलन का शिकार होते हुए भी देखे गये हैं। वर्तमान उपभोक्तावादी दौर में अकेलापन, कुण्ठा एवं भय ग्रस्तता के कारण बच्चे स्वच्छंदता की ओर भी उन्मुख हुए हैं। इससे परिवार व्यवस्था के समक्ष चुनौती प्रस्तुत हुई। स्वयं माता–पिता भी अपनी व्यावसायिक एवं पारिवारिक दायित्वों के कारण भूमिका संघर्ष का अनुभव कर रहे हैं। पूर्व शोधों के निष्कर्षों में यह भी पाया गया कि संयुक्त परिवारों में बुजुर्गों, सम–वयस्क चचेरे भाई–बहिनों, एवं परिवार के अन्य सदस्यों से उन्हें यह आवश्यक समानुभूति काफी हद तक प्राप्त हुई है। जिससे उनका विचलन रूका एवं उनमें सामाजिक संस्कारों का संचयन हुआ।

इस प्रकार पूर्व शोध पत्रों में मुख्यतः निम्न बातें देखी गयी। –

1. पति–पत्नी के आपसी सामंजस्य ने बच्चों के पालन–पोषण में सहायता की है।
2. माता–पिता दोनों के कामकाजी होने से अतिरिक्त आय सुनिश्चित हुई जिसके कारण उनके बच्चों का पालन–पोषण बेहतर हो सका।
3. माता–पिता द्वारा बच्चों को कम समय देने के कारण उनमें अकेलेपन का भाव आया, परिवार से लगाव कम हुआ है।
4. संयुक्त परिवार व्यवस्था में कामकाजी माता–पिता के बच्चों में अपने परिजनों से समानुभूति (Empathy) मिली है तथा उनको अकेलेपन का अनुभव नहीं हुआ।

अध्ययन के इसी क्रम में व्यक्तिगत स्तर पर इलाहाबाद के शहरी क्षेत्र में एक सूक्ष्म प्रेक्षण किया गया जिसमें 100 परिवारों का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में प्रश्नावली प्रविधि का प्रयोग करते हुए, व्यक्तिगत (one-to-one) साक्षात्कार किया गया जो इस प्रकार रहा –

सारणी – I

क्र0 सं0	प्रश्न परिवार	एकल परिवार			संयुक्त परिवार		
		हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग
1.	बच्चों के पालन में समस्या	40	20	60	10	30	40
2.	पालन के लिए सहायक रखा	33	27	60	7	33	40
3.	बुर्जुग माता–पिता का सहयोग	15	45	60	40	0	40
4.	पति–पत्नी बच्चों की देखभाल के लिए सामंजस्य	55	5	60	20	20	40
5.	क्या नौकरी छोड़ी?	8	52	60	00	40	40
6.	किसने छोड़ी	पत्नी ने	0	0	0	0	0
7.	क्या बच्चे बीमार पड़े	40	20	60	15	0	सामान्य
8.	सामाजिक सहायता कार्यक्रमों का लाभ मिला	60	0	60	40	0	40

इसी तरह 25 ऐसे परिवारों का अध्ययन किया गया जिसमें स्थायी रूप से बीमार बच्चे पाये गये। जिनमें एकल एवं संयुक्त परिवारों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें उपरिवर्णित प्रश्नावली के प्रश्नों के माध्यम से ही साक्षात्कार किये गये जो इस प्रकार हैं –

सारणी – II

क्र0सं0	प्रश्नावली	एक परिवार	संयुक्त परिवार
1.	बच्चों के पालन में समस्या	बहुत ज्यादा	सामान्य
2.	सहायक रखा	हाँ	सामान्यतः नहीं
3.	बुजुर्ग माता–पिता का सहयोग	सामान्य	अधिकतम
4.	बच्चों की देखभाल के लिए पति–पत्नी का सामंजस्य	अधिकतम	सामान्य
5.	क्या किसी एक को नौकरी छोड़नी पड़ी?	सामान्यतः	सामान्यतः नहीं

इस प्रकार उपर्युक्त दोनों सारणियों में से पहली सारणी को देखा जाय तो जहाँ एकल परिवार में बच्चों के पालन–पोषण में ज्यादा समस्या देखी यगी वहीं संयुक्त परिवारों में यह समस्या प्रायः कम रही। एकल परिवारों ने सामान्यतः अपने बच्चों की देखभाल के लिए सहायक रखा जबकि संयुक्त परिवारों में ऐसा प्रायः कम देखा गया। इसके मुख्य कारण प्रथमतः माता–पिता के पास समयाभाव के साथ–साथ अतिरिक्त आय का होना भी रहा जबकि संयुक्त परिवारों में अन्य परिजनों के सहयोग के कारण ऐसी आवश्यकता अनुभव नहीं की गई। एकल परिवारों में बुजुर्ग माता–पिता का सहयोग भी प्रायः कम रहा जबकि संयुक्त परिवारों में यह पूर्णतः प्राप्त हुआ। बच्चों की देखभाल के लिए पति–पत्नी के बीच सामंजस्य ही एकल परिवारों में बच्चों के पालन–पोषण का मुख्य आधार देखा गया जबकि संयुक्त परिवारों में यह प्रकृति सामान्य रही या विशेष आवश्यकता अनुभव नहीं की गयी। एकल परिवारों में कुछ दंपत्तियों में से पत्नियों ने ही बच्चों की देखभाल के लिए नौकरी छोड़ी जबकि संयुक्त परिवारों में ऐसा नहीं देखा गया। सर्वेक्षण में यह तथ्य भी देखा गया की एकल परिवार वाले कामकाजी अभिभावकों के बच्चे प्रायः ज्यादा बीमार पड़े जबकि संयुक्त परिवारों में यह दर काफी कम या सामान्य रही। वहीं सामाजिक सहायता कार्यक्रमों के माध्यम से दोनो ही प्रकार के परिवार वाले अभिभावकों को लाभ प्राप्त हुआ है।

इसी प्रकार सारणी–II की देखा जाय तो स्थायी रूप से बीमार बच्चों वाले परिवारों में बच्चों के पालन पोषण में समस्या देखी गयी किन्तु संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों में यह समस्या ज्यादा बड़ी दिखाई पड़ी। एकल परिवारों में सहायकों को रखा गया जबकि संयुक्त परिवारों में विशेष आवश्यकता होने पर ही। इसी तरह बुजुर्ग माता–पिता का सहयोग भी एकल परिवारों की तुलना में संयुक्त परिवारों में ज्यादा रहा। बच्चों की देखभाल के लिए पति–पत्नी के बीच सामंजस्य एकल परिवारों में ज्यादा महत्वपूर्ण तत्व रहा जबकि एकल परिवारों में देखभाल के लिए किसी एक को नौकरी छोड़नी पड़ी है। जबकि संयुक्त परिवारों में यह घटना कम रही है।

उपर्युक्त प्राप्त तथ्यों को हम देखे तो कुछ प्रमुख तत्व निकलकर आते हैं। जो इस प्रकार है –

1. बच्चों की देखभाल करना संयुक्त परिवारों की अपेक्षा एकल परिवारों में ज्यादा कठिन रहा है।
2. बच्चों की देखभाल के लिए एकल परिवार के कामकाजी अभिभावकों ने सामान्यतः सहायक रखे हैं।
3. बच्चों के दादा–दादी/नाना–नानी का सहयोग संयुक्त परिवारों में ज्यादा मिला।
4. एकल परिवारों में बच्चों की देखभाल में एक महत्वपूर्ण योगदान पति–पत्नी के मध्य सामंजस्य है।
5. एकल परिवारों में बच्चों की देखभाल के कुछ माताओं को नौकरी छोड़नी पड़ी जबकि स्थायी रूप से बीमार बच्चों में यह प्रवृत्ति और ज्यादा देखी गयी।
6. एकल परिवारों के बच्चों की अपेक्षा संयुक्त परिवारों के बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर रहा है।
7. सामाजिक सहायता कार्यक्रमों, नियमों, सुविधाओं ने सभी को लाभान्वित किया है।

इस तरह पूर्व अध्ययनों एवं इस शोध प्रपत्र के माध्यम से यह पता चलता है कि समाज में नयी बदलती सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में बच्चों की देखभाल एक नवीन चुनौती लेकर खड़ी हुई है। यह नवीन उभरते एकल परिवारों की व्यवस्था जो मुख्यतः वर्तमान दौर की उपोत्पाद भी है में और गंभीर हुई है। यह समस्या केवल बच्चों की पालन–पोषण तक ही सीमित नहीं है। यह इन बच्चों के स्वस्थ शारीरिक–मानसिक विकास, उनके युवा होते व्यक्तित्व के सद्मार्गी होने के साथ परिवार एवं संतुलित समाज के समक्ष भी चुनौती के रूप में देखा जा रहा है।

वर्तमान उपभोक्तावाद एवं उदारवाद के दौर में जब व्यक्ति केन्द्र में है तथा उसकी इच्छा एवं आवश्यकता के मध्य संतुलन साधना एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर उभरा है। ऐसी परिस्थिति में अपनी सामाजिक प्रस्थिति को बनाये रखने एवं गुणवत्तापरक जीवन जीने के लिए आर्थिक दृष्टिकोण से मजबूत होना अति आवश्यक हो गया है। ऐसे में पूर्व की परंपरागत पारिवारिक व्यवस्था में बदलाव दिख रहा है। जिसका व्यापक प्रभाव कामकाजी अभिभावकों एवं उनके बच्चों पर पड़ा है। प्रकार्यात्मक मॉडल के आलोक में देखे तो परिवार नामक सामाजिक संस्था के विभिन्न अंग भी पूर्व की संयुक्त परिवार व्यवस्था की अपेक्षा कम प्रभावी सहयोग कर पा रहे हैं। हालांकि नव–उदारवादी संकल्पना पर आधारित कल्याणकारी राज्य के अन्तर्गत चलाये गये सामाजिक सहायता कार्यक्रमों के माध्यम से कामकाजी अभिभावक लाभान्वित भी हुए हैं। जो यह स्पष्ट करता है कि यदि इस समस्या के क्षेत्र में समाज के अन्दर एवं बाहर दोनों ओर से हस्तक्षेप किया जाय तो इसकी गंभीरता एवं तीव्रता को कम किया जा सकता है। इस समाज के एक अंग के रूप में परिवार व्यवस्था एवं उसके घटक माता–पिता, उनके बच्चे सकारात्मक सहयोग करके एक संतुलित समाज का निर्माण कर सकते हैं, बशर्ते एकल परिवारों वाले कामकाजी अभिभावकों एवं उनके बच्चों की देखभाल, समानुभूति पूर्वक पालन–पोषण एवं माता–पिता को गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने की दशाएं तथा मनोवैज्ञानिक आत्म विश्वास का माहौल मिल सके। इसके लिए समाज विज्ञानियों एवं शोधार्थियों की एक प्रविधि व मार्ग खोजने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः इस शोध पत्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राप्ति दोहरे कामकाजी अभिभावकों वाले एकल परिवारों के माता–पिता एवं उनके बच्चों की देखभाल एक महत्वपूर्ण चुनौती दिखाई पड़ी तथा उसके समाधान के लिए समाज वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों को एक दृष्टि बिन्दु प्रदान करना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *रानी, काला, 1976, रोल कॉफिलिक्ट इन वर्किंग वूमेन।*
2. *कोनानटम्बिगी, रजनी एम, 2007, डे केयर फार यंग चिल्ड्रेन इन इंडिया इस्यू एण्ड प्रॉस्पेक्टस।*

3. सोशियोलॉजिकल थ्योरी, 2011, मैक्ग्रा हिल एजुकेशन।
4. मर्टन, रॉबर्ट के0 (1968–08–01) सोशल थ्योरी एण्ड सोशल थ्योरी, डॉन मिल्स, ओ0एन0टी0 : ऑक्सफोर्ड यू0पी0, 2008 प्रिन्ट।
5. राजाधयाक्षा, यू0 अरून; 2009; वर्क फेमिली कॉनफिलिक्ट इन टर्म ऑफ कमपाराटिव स्टडी ऑफ मेन एण्ड वूमेन, डिजरटेशन, एकेडमी ऑफ मैनेजमेंट एननुअल मीटिंग।
6. शुक्ला, अर्चना; 1987, ''डीसीजन मेकिंग इन सिंगल एण्ड ड्यूल कैरियर फेमिली इन ड्यूल कैरियर फेमिली'' आर्गेनाइजेशनल बिहेवियर एण्ड ह्यूमन डीसीजन प्रोसेस वाल्यूम 51, पृ0 51–75।
7. वाल्क, रेइमेरा एण्ड श्रीनिवासन वासन्थी; 2011, ''वर्क फेमिली बैलेन्स ऑफ इंडियन सॉफ्टवेयर प्रोफेसनल'' आई0आई0बी0एम0 मैनेजमेंट रिव्यूय 03/2011
8. कपूर, रामा; 1969; ''रोल कान्फिलिक्ट एण्ड कॉपिंग बिहेवियर ऑफ मैरिड वर्किंग वूमेन'' पर्टिनिका जे0 सोशल साइन्स एण्ड ह्यूमन, वाल्यूम 3, पृ0 97–104
9. कॉजी, मर्गेक्स; 2012, ''कान्फिलिक्ट रोल्स : बैलेन्सिंग फेमिली एण्ड प्रोफेसनल लाइफ ए चैलेंज फॉर वर्किंग वूमेन, मास्टर थेसिस स्प्रिंग 2012, लिनेयूस यूनिवर्सिटी स्वीडन।
10. राथो, स्टेहनी मेडली; 2012, ''दी सिक रोल कान्फिलिक्ट'' सोशियोलॉजी इन फोकस।
11. पाण्डा, उत्तम कुमार; 2011, ''रोल कान्फिलिक्ट, स्ट्रेस एण्ड ड्यूल कैरियर कपल्स एन इम्पीरिकल स्टडी,'' दी जरनल ऑफ फेमिली वेलफेयर, पृ0 72–88।
12. मनी, विजया; 2013, ''वर्क लाइफ बैलेन्स एण्ड वूमेन प्रोफसनल'' ग्लोबल जरनल ऑफ मैनेजमेंट एण्ड बिजिनेस रिसर्च इण्टर डिसीपलीन, वाल्यूम 13, इस्यू–5।
13. अहमद, अमीनाह, 2008, ''जॉब फेमिली एण्ड इन्डीव्यूजवल फैक्टर्स एस प्रीडिक्टर्स'' जरनल ऑफ ह्यूमन रिसोर्स एण्ड एडल्ट लर्निंग, वाल्यूम 4, पृ0 130।
14. पलेल चिन्थाज, गोवन्डर वासान्थे पारूक जुबेदा एण्ड रामगून सरोजनी, 2006, ''वर्किंग मदर : फेमिली वर्क कान्फिलिक्ट, जॉब परफार्मेन्स एण्ड फेमिली वर्क वेरिएबल्स'' जरनल ऑफ इंड्रिस्ट्रियल फिजियोलॉजी, वाल्यूम 32, पृ0 39–45।
15. तसाई, हुई इंग, 2008 ''वर्क फेमिली कान्फिलिक्ट, पॉजिटिव, स्पिलओवर एण्ड इमोशन एमान्ग ऐशियन अमेरिका वर्किंग मदर'' ए डिजरटेशन सबमिटेड इन पार्सियल फुलफिलमेंट ऑफ दी रिक्वायरमेंट फॉर दी डिग्री ऑफ डाक्टर ऑफ फिलासिफी। (फीजियोलॉजी) यूनिवर्सिटी ऑफ मिचीगन।